Tender Heart School, Sector 33-B, Chandigarh.

Date - Class - VI
Subject - Hindi Literature Page - 1
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

पुस्तक - नवतरंग - 6
पाठ - 10 बालक चंद्रगुप्त (भाग-2)

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

यह पाठ कक्षा छठी की हिन्दी साहित्य का है। आपको इस पाठ में पाठ-10 'बालक चंद्रगुप्त का अगला भाग समझाया जाएगा। यह पाठ आपको 18 अक्तूबर को भेजा जाएगा।

बच्चो! पाठ के पिछले भाग में हमने पढ़ा था कि मगध में राजा नंद का राज्य था, जो एक क्रूर और मूर्ख राजा था। उसने अपने सेनापति को बंदी बनाया हुआ था। उसी सेनापति का बेटा चंद्रगुप्त अपने घर के सामने खेल रहा था। वह स्वयं राजा बना था और उसने बाकी लड़कों को अपनी प्रजा बनाया था। वहाँ से चाणक्य गुजरते हैं और उस बालक की सारी क्रीड़ा को ध्यान से देखते हैं। वह बालक को राजा की भांति व्यवहार करते देखकर प्रसन्न भी होते हैं और अचंभित भी होते हैं। चाणक्य जब बालक से बात कर रहे होते हैं, तभी उसकी माँ आ जाती है। तब चाणक्य बालक की माँ से कहते हैं कि इसे राजकुल में लेकर आओ।

बच्चो! अब हम आज पाठ समझेंगे।

चाणक्य बालक को आशीर्वाद देकर चले जाते हैं। बालक की चाणक्य की बात मान कर एक दिन अपने लड़के को लेकर राजसभा में पहुँचती है।

__/__/____

Date - Class - VI
Subject - Hindi Literature Page - 2
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

राजसभा में पहुँचकर वह देखते हैं कि नंद की सभा बड़े - बड़े चापलूस और मूर्ख मंत्रियों से भरी पड़ी है।

बच्चो! पहले के राजा लोग एक - दूसरे के बल, बुद्धि और वैभव की परीक्षा लिया करते थे और इसके लिए वे तरह - तरह के उपाय सोचा करते थे। जब बालक अपनी माँ के साथ राजसभा में पहुँचा, उसी समय किसी राजा के यहाँ से नंद की राजसभा की बुद्धि का अनुमान लगाने के लिए, लोहे के बंद पिंजरे में मोम का सिंह बनाकर भेजा गया था और उसके साथ यह शर्त थी कि शेर को बिना पिंजरा खोले निकालना है। सारी राजसभा यह दृश्य देख रही थी परन्तु किसी को कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। वह छोटा सा बालक इस सारी लीला को बहुत ध्यान से देख रहा था। उसने कहा, "मैं इस शेर को निकाल दूँगा।"

सभी लोग छोटे से बालक का साहस देखकर हँस पड़े कि भला एक छोटा सा बालक भी ऐसा कार्य कर सकता है, जिसे इतने बड़े - बड़े मंत्री न कर सके। राजा नंद ने आश्चर्य से पूछा, "यह कौन है?"

एक मंत्री ने बताया कि यह राजबंदी मौर्य - सेनापति का लड़का है। इतना सुनते ही नंद क्रोधित होकर बोला, "यदि तू इसे न निकाल सका, तो तू भी इस पिंजरे में बंद कर दिया जाएगा। इतना सुनते ही बालक की माता डर गई कि किस विपत्ति में फंस गए।

__/__/____

Date -   Class - VI
Subject - Hindi Literature   Page - 3
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

परन्तु बालक बिना किसी डर से आगे बढ़ा और पिंजरे के पास जाकर उसको बड़े ध्यान से देखा। फिर उसने लोहे की शलाकाओं को गरम करके उस सिंह को गलाकर पिंजरे को खाली कर दिया।
सभी लोग यह देखकर चकित रह गए।
राजा ने बालक से पूछा - "तुम्हारा नाम क्या है?"
बालक ने उत्तर दिया - "चंद्रगुप्त"

बच्चो! आज हमारा यह पाठ पूरा समाप्त हो चुका है। अब मैं आपसे अभ्यास के लिए कुछ प्रश्न पूछूँगी, जिनके उत्तर आप अपनी हिन्दी की अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न-1. चाणक्य ने बालक की माँ से क्या कहा?
प्रश्न-2. नंद कैसा राजा था?
प्रश्न-3. किसी राजा ने नंद की सभा में क्या भेजा था?
प्रश्न-4. नंद के सभासद कैसे थे?
प्रश्न-5. अंत में पिंजरे का शेर किसने निकाला?

बच्चो! अब मैं आपको इन प्रश्नों के उत्तर बताऊँगी।

उत्तर-1. चाणक्य ने बालक की माँ से कहा कि इसे राजकुल लेकर आया करो।
उत्तर-2. नंद एक मूर्ख और निष्ठुर राजा था।
उत्तर-3. किसी राजा ने नंद की सभा में एक लोहे के पिंजरे में मोम का शेर डालकर भेजा था और कहलवाया था कि इस शेर को बिना पिंजरा काटे बाहर निकालना है।

__/__/____

Date- Class - VI
Subject- Hindi Literature Page- 4
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

उत्तर - 4. नंद के सभासद चापलूस और मूर्ख थे।
उत्तर - 5. अंत में पिंजरे का शेर बालक चंद्रगुप्त ने निकाला।

बच्चो! अब मैं आपको गृहकार्य दूँगी, जिसे आप अपनी व्याकरण की उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य :-

≐ बच्चो! आप इस पाठ के शब्द-अर्थ याद करेंगे।

≐ बच्चो आप पाठ 'बालक चंद्रगुप्त' के पृष्ठ - 8। पर आए 'विस्तार में' के प्रश्न करने की कोशिश करेंगे।

धन्यवाद।

Last page